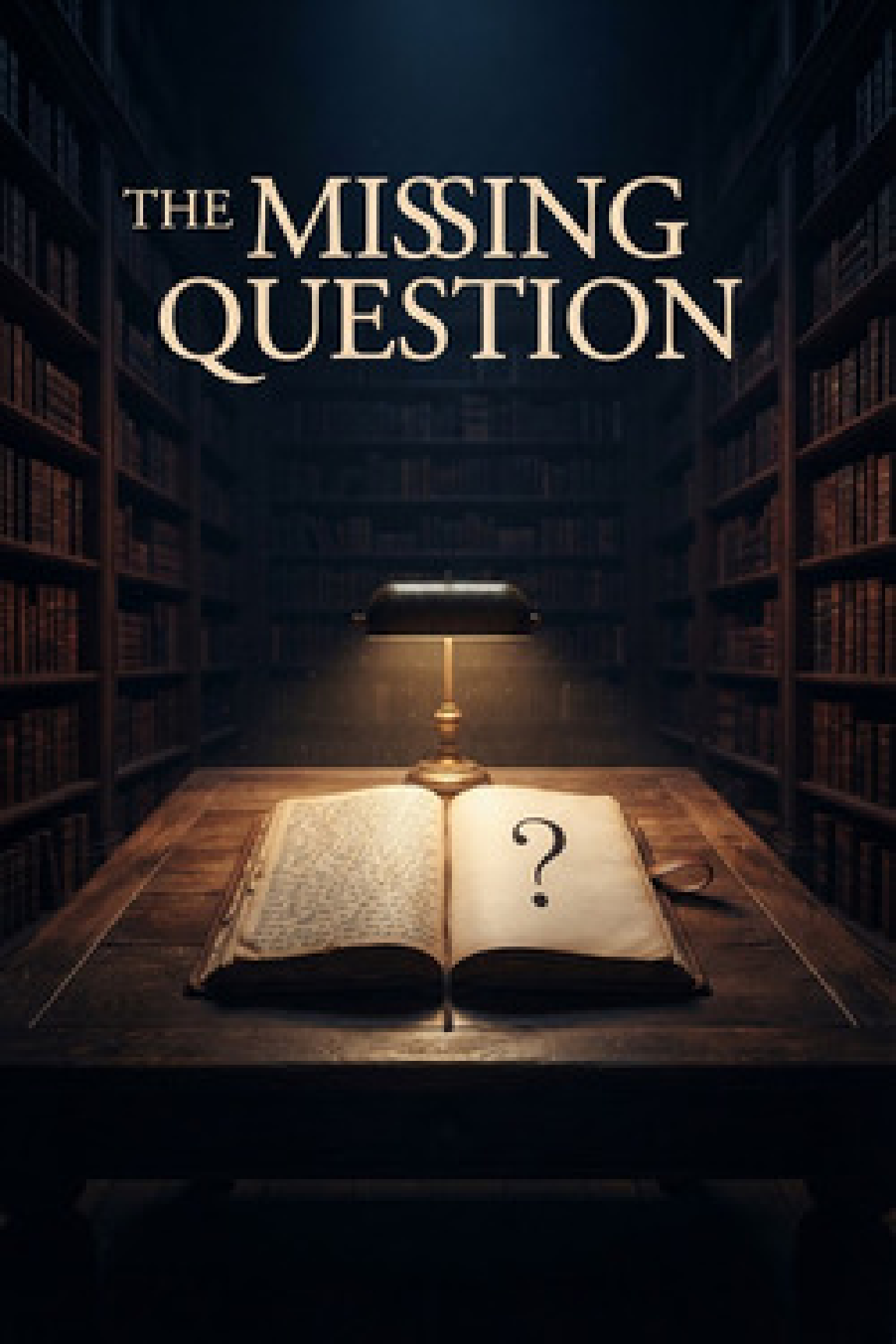

THE MISSING QUESTION
?

भाग दो

दहलीज़ 6

छूटा हुआ सवाल

अपने जीवन के अधिकांश हिस्से में मैं जवाबों का पीछा करता रहा।

जैसे लगभग हर कोई करता है।

मैं जानना चाहता था कि सही फ़ैसला कौन-सा है।

बेहतर रास्ता कौन-सा है।

जो मैं जी रहा था, उसका अर्थ क्या है।

मैं स्पष्टता चाहता था।

दिशा।

पुष्टि।

मैं मानता था कि परिपक्वता जवाब जमा करने में है।

जितना ज़्यादा समय बीतता, उतना ही मुझे समझ आ जाना चाहिए था कि यह सब कैसे चलता है।

जितना ज़्यादा अनुभव मैं जमा करता, उतने ही कम संदेह मेरे पास होते।

यह एक सुरुचिपूर्ण सिद्धांत था।

समस्या यह थी कि जीवन उस सिद्धांत को पूरी तरह अनदेखा करता प्रतीत होता था।

साल बीते।

अनुभव बढ़ा।

ज़िम्मेदारियाँ बढ़ीं।

और फिर भी सवाल कम नहीं हुए।

इसके उलट।

वे और गहरे हो गए।

और जटिल।

और कठिन।

यह एक डगमगा देने वाली खोज थी।

लड़कपन में मैं बड़ों की कल्पना ऐसे लोगों के रूप में करता था जिन्होंने समझ लिया था।

फिर मैं बड़ा हुआ।

और मैंने पाया कि हम में से बहुतों ने बस अनिश्चितता के साथ जीना सीख लिया था।

यह एक ही बात नहीं है।

जानने और चलते रहने में बहुत बड़ा अंतर है।

बहुत से लोग चलते रहते हैं।

कुछ ही सचमुच जानते हैं।

मुझे एक दौर याद है जब मैं हर जगह जवाब खोजता था।

किताबों में।

संगठनों में।

यात्राओं में।

सबसे अनुभवी लोगों में।

आध्यात्मिकता में।

तर्कशीलता में।

आँकड़ों में।

मैं मानता था कि कहीं न कहीं एक ऐसी व्याख्या मौजूद है जो हर चीज़ को व्यवस्थित कर सके।

एक सूत्र।

एक कुंजी।

एक व्यवस्था।

पर हर बार जब मुझे लगता कि मैंने उसे पा लिया है, कोई नया अनुभव आकर उस पर सवाल खड़ा कर देता।

शुरू में यह निराशाजनक था।

फिर यह दिलचस्प हो गया।

आख़िर में यह मुक्तिदायक बन गया।

क्योंकि मुझे कुछ समझ आया।

जवाबों का जीवन छोटा होता है।

सही सवालों का जीवन लंबा होता है।

बहुत लंबा।

कुछ सवाल दशकों तक हमारा साथ देते हैं।

मैं कौन हूँ?

सचमुच क्या मायने रखता है?

प्रेम करने का अर्थ क्या है?

किस चीज़ के लिए दुख उठाना उचित है?

जब सब कुछ बदल जाता है, तब क्या बचता है?

ये सुलझाए जाने वाले सवाल नहीं हैं।

ये ऐसे सवाल हैं जिनमें बसा जाता है।

अंतर बुनियादी है।

एक जवाब बंद करता है।

एक सवाल खोलता है।

और जीवन, आख़िरकार, खुलेपन को पसंद करता है।

हर बार जब मैं किसी नए अनुभव से गुज़रता, मैं देखता कि उसका मूल्य उतना उस निष्कर्ष में नहीं था जिस तक मैं पहुँचा था।

वह उस सवाल में था जो उसने पैदा किया था।

एक हानि एक सवाल पैदा करती है।

एक प्रेम एक सवाल पैदा करता है।

एक बीमारी एक सवाल पैदा करती है।

एक जीत एक सवाल पैदा करती है।

सफलता भी एक सवाल पैदा करती है।

अक्सर विफलता से कहीं ज़्यादा कठिन।

क्योंकि कुछ पा लेने के बाद एक अप्रत्याशित सवाल सामने आता है:

“और अब?”

सालों तक मैं मानता रहा था कि चीज़ों का अर्थ जवाबों में छिपा है।

फिर मैंने एक अनोखा संयोग देखना शुरू किया।

जिन सबसे दिलचस्प लोगों से मैं मिला, वे सबसे कम निश्चित भी थे।

वे अनिर्णायक नहीं थे।

वे खुले थे।

वे समझते थे कि वास्तविकता हमारी मान्यताओं से विशाल है।

हमारे ढाँचों से ज़्यादा जटिल।

हमारे निष्कर्षों से ज़्यादा समृद्ध।

इसीलिए वे सवाल पूछते रहते थे।

कमज़ोरी के कारण नहीं।

बुद्धिमत्ता के कारण।

सच्ची बुद्धिमत्ता कई जवाब रखने में नहीं है।

वह यह पहचानने में है कि कौन-से सवाल अब भी पूछे जाने योग्य हैं।

अपने जीवन में मैं अलग-अलग देशों में गया हूँ।

अलग-अलग संस्कृतियों में।

अलग-अलग धर्मों में।

अलग-अलग व्यवस्थाओं में।

हर जगह के अपने अलग जवाब थे।

और फिर भी बुनियादी सवाल लगभग हमेशा एक जैसे थे।

कैसे जिएँ।

कैसे प्रेम करें।

मृत्यु का सामना कैसे करें।

समय के साथ कैसे जिएँ।

एक अर्थ कैसे पाएँ।

इस बात ने मुझे गहराई से छुआ।

क्योंकि इसने कुछ सार्वभौमिक दिखाया।

सभ्यताएँ भाषा बदलती हैं।

बुनियादी सवाल नहीं बदलते।

शायद ठीक इसीलिए कथा-साहित्य बचा रहता है।

क्योंकि वह समाधान नहीं देता।

वह अन्वेषण देता है।

एक उपन्यास जीवन को सुलझाने के लिए नहीं होता।

वह एक सवाल को रोशन करने के लिए होता है।

और एक अच्छा सवाल किसी व्यक्ति के साथ सालों तक चल सकता है।

बहुत से जवाबों से बेहतर।

मुझे एक दिन याद है जब मैं उन सभी निश्चितताओं पर विचार कर रहा था जिन्हें मैंने छोड़ दिया था।

वे बहुत सारी थीं।

उनमें से कई ने मेरे अस्तित्व के लंबे दौरों पर शासन किया था।

कुछ उपयोगी रही थीं।

कुछ कम।

पर सबने किसी अधिक परिपक्व चीज़ को जगह दी थी।

इस चेतना को कि वास्तविकता कोई अदालत नहीं है।

वह एक संवाद है।

जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते, उनके बीच एक अनंत संवाद।

जो हम समझते हैं और जो हमसे छूट जाता है, उनके बीच।

जो हम रहे हैं और जो हम बन रहे हैं, उनके बीच।

उस क्षण से मैंने संदेहों को शत्रुओं की तरह मानना छोड़ दिया।

मैंने उन्हें यात्रा-साथी मानना शुरू किया।

सभी संदेह ध्यान के योग्य नहीं होते।

कुछ शोर होते हैं।

कुछ डर होते हैं।

कुछ बस उलझन होते हैं।

पर कुछ और भी होते हैं।

ज़्यादा गहरे।

ज़्यादा मौन।

ज़्यादा सच्चे।

वे जो बार-बार लौटते हैं।

वे जो साल-दर-साल चेतना का दरवाज़ा खटखटाते हैं।

वे जो सुने जाने की माँग करते हैं।

मैंने उनका सम्मान करना सीखा है।

क्योंकि वे अक्सर कुछ महत्वपूर्ण सँजोए रखते हैं।

एक रूपांतरण।

एक सच।

एक दिशा।

हमारा एक हिस्सा जो अब तक अनखोजा है।

पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो अब मैं उन लोगों से प्रभावित नहीं होता जिनके पास हर चीज़ का जवाब है।

मुझे उनमें ज़्यादा दिलचस्पी है जो एक सच्चा सवाल रखना जानते हैं।

क्योंकि एक जवाब ख़त्म हो सकता है।

एक सवाल पूरी ज़िंदगी उत्पन्न कर सकता है।

शायद यह उन सबसे क़ीमती सबक़ों में से एक है जो समय ने मेरे लिए छोड़े हैं।

सिर्फ़ जवाब मत खोजो।

वह सवाल खोजो जिसने उसे जन्म दिया।

क्योंकि हर सार्थक विश्वास के पीछे।

हर सच्चे बदलाव के पीछे।

हर महत्वपूर्ण चुनाव के पीछे।

हर उस कहानी के पीछे जो सुनाए जाने योग्य है।

हमेशा एक अदृश्य सवाल होता है।

और वहीं यात्रा शुरू होती है।

जवाब से बहुत पहले।